दीनदयाल शोध केन्द्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर, (उ0प्र0) पाठ्यक्रम समिति (Board of studies)
पाठ्यक्रम (Syllabus)
भाग–(क)
दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
(Post Graduate Diploma in Deendayal Upadhyay Studies)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक जीवन द्वारा हिंदू समाज के संगठन का कार्य प्रारंभ किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने उन्हें राजनीति के क्षेत्र में भेजा। वे भारतीय **राजनीति में संस्कृति के 'दूत'** थे। उनका देहावसान रहस्यमय परिस्थितियों में हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपना श्रेष्ठ विचारक, कुशल संगठक, निष्काम कर्मयोगी तथा भारतीय जनसंघ ने राष्ट्रीय अध्यक्ष खो दिया। अतः लेखक, विचारक एवं राजनीति को सेवा का माध्यम मानने वाले ऐसे राजनेता के जीवन–दर्शन को जन–जन तक पहुंचाना अपेक्षित है। दीनदयाल शोध केन्द्र में **दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन में स्नातकोत्तर (Post Graduate Diploma in Deendayal Upadhyay Studies)** चलाया जाना अति आवश्यक है और उनके विचारों को अद्यतन चलाना चाहिये, तभी प्राध्यापक एवं विद्यार्थी सभी उनके विचारों को समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम का दृष्टिकोण व कालावधि

- यह पाठ्यक्रम एक (1) वर्ष का होगा, इसमें दो सेमेस्टर तथा प्रत्येक सेमेस्टर में चार प्रश्नपत्र निर्धारित होंगे।

पाठ्यक्रम के लिए पात्रता

- छात्र का किसी भी संकाय में स्नातक/ स्नातकोत्तर होना अपेक्षित है। स्नातक स्तर की डिग्री मान्यता प्राप्त किसी महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय से होना अपेक्षित है। इसके लिए स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त छात्र भी पात्र होंगे।
- छात्रों का चयन विश्वविद्यालय के नियमों एवं परिनियमों के आधार पर किया जायेगा।

क्रेडिट

- पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्येक प्रश्न पत्र 6 क्रेडिट का होगा। प्रत्येक प्रश्न पत्र में छात्र को परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 33 प्रतिशत अंक विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार अर्जित करना अनिवार्य होगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 75 प्रतिशत या इससे अधिक होंगे, उसे विशिष्टता के उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 60 प्रतिशत तथा 75 प्रतिशत से कम होंगे, उसे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 50 प्रतिशत तथा 60 प्रतिशत से कम होंगे, उसे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।
- जिस परीक्षार्थी के अंक 45 प्रतिशत तथा 50 प्रतिशत के बीच होंगे, उसे तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण माना जाएगा।

- परीक्षार्थी को उत्तीर्ण होने के लिए हर प्रश्न पत्र में 33 प्रतिशत अंक अर्जित करना अनिवार्य है।

- **उपस्थिति**

  छात्रों को पाठ्यक्रम के गम्भीर पक्षों को समझने के लिए निर्धारित समय सारिणी के अनुसार व्याख्यान में अपनी उपस्थिति दर्ज करनी होगी, जिसमें 75 प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य है।

परीक्षा एवं अंक

प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंकों का निर्धारित होगा। जिसमें 75 अंक लिखित परीक्षा के आधार पर तथा 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आाधार पर विश्वविद्यालय नियमों के आाधार पर होगा।

कुल स्थान (seats)

दीनदयाल शोध केन्द्र में एक वर्षीय स्नातकोत्तर उपाधि के लिए 60 स्थान (Seats) निर्धारित है।

पाठ्यक्रम शुल्क 10,000 रूपये मात्र निर्धारित है।

Faculty)

यह पाठ्यक्रम बहु–विषयक प्रकृति का है। इसलिए पाठ्यक्रम शिक्षण के लिए विविध विषय क्षेत्रों से अतिथि प्राध्यापक आमंत्रित किए जाने अपेक्षित हैं।

दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा उपाधि के प्रथम सेमेस्टर के प्रश्न पत्रों की योजना विधि :

क्र. सं.	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक
1.	प्रथम प्रश्न पत्र	**PGDDUS-101**	**PT. DEENDAYAL UPADHAYA : JIVAN AUR DARSHAN**	06	75+ 25	33
2.	द्वितीय प्रश्न पत्र	**PGDDUS-102**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYA : SAMAJIK AUR RAJNITIK CHINTAN**	06	75+ 25	33
3.	तृतीय प्रश्न पत्र	**PGDDUS-103**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYA : DAWARA PRATIPADIT SAMAJ NITI EVAM ANYA NITIYON KA TULNATMAK ADHYAN**	06	75+ 25	33
4.	चतुर्थ प्रश्न पत्र	**PGDDUS-104**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYA AUR ANYA SAMKALEEN BHARTIYA VICHARAK**	06	75+ 25	33
			कुल योग	24	400	132

प्रथम प्रश्न पत्र

पाठ्यक्रम कोड : PGDDUS 101

दीनदयाल उपाध्याय : जीवन और दर्शन

क्रेडिट : 6

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटें

उद्देश्य–यह पाठ्यक्रम दीनदयाल उपाध्याय के जीवन–दर्शन को समझने के लिए तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य दीनदयाल उपाध्याय के प्रचारक जीवन से लेकर एकात्म मानव दर्शन के प्रणेता बनने तक का सम्यक ज्ञान कराना भी है।

परिणाम–यह पाठ्यक्रम संबंधित विषय में स्वतंत्र सोच तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण का विकास करेगा।

इकाई–1 प्रारंभिक जीवन

- भारतीय संस्कृति : विविधता में एकता
- मथुरा की सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्राचीन और अर्वाचीन
- प्राच्य प्रभाव : भारतीय पुनर्जारण, वैदिक विचार परंपरा, औपनिषदिक विचार परंपरा, रामायण एवं महाभारत–विचार, दर्शन शास्त्र–परंपरा, मध्यकालीन व आधुनिक भारतीय विचार परंपरा, दैशिकशास्त्र।
- पाश्चात्य प्रभाव : कार्ल मार्क्स, लेनिन, स्टालिन, जेम्स मिल, एडमंड बर्क।
- संयुक्त परिवार : कष्टमय बचपन, मृत्यु दर्शन, अक्षरश : अनिकेत, मेधावी छात्र जीवन, निर्भिक एवं सेवाभावी

इकाई–2 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ का प्रचारक एवं दृष्टिपथ : बालूजी महाशब्दे से मित्रता, राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति धारणा, स्वतंत्रता संग्राम और दीनदयाल उपाध्याय, बाबासाहब आप्टे तथा दादा राव परमार्थ का सान्निध्य, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की दृष्टि।

- **प्रचारक जीवन की यात्रा** : जिला प्रचारक, दो पत्र, श्रीगुरूजी की सांस्कृतिक दृष्टि एवं डॉ• हेडगेवार, सह प्रांत प्रचारक, पांचजन्य साप्ताहिक एवं 'राष्ट्रधर्म' मासिक का प्रकाशन।
- राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के कार्य में योगदान
- दीनदयाल उपाध्याय की इतिहास दृष्टि : भगवान श्रीकृष्ण, जगद्गुरू शंकराचार्य, गोस्वामी तुलसीदास, छत्रपति शिवाजी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक व कांग्रेस।

इकाई–3 भारतीय जनसंघ और पंडित दीनदयाल उपाध्याय :

कांग्रेस का पुर्वाग्रह, संघ पर प्रतिबंध, भारतीय जनसंघ की जन्मकथा, आजादी के आन्दोलन के प्रति धारणा, संघ और राजनीति पर व्यापक बहस : (क) राजनीतिक दल नहीं, (ख) संघ का अगला कदम, (ग) कांग्रेस का अंतर्द्वंद।

- भारतीय जनसंघ और पंडित दीनदयाल उपाध्याय : भारतीय जनसंघ की स्थापना का घटनाचक्र, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का नेहरू मंत्रिमंडल से त्यागपत्र, भारतीय जनसंघ की स्थापना, श्रीगुरूजी : डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी और भारतीय जनसंघ।

दीनदयाल उपाध्याय–महामंत्री की भूमिका में :

भारतीय जनसंघ का घोषणा–पत्र, प्रथम अधिवेशन पारित प्रस्ताव एवं दीनदयाल उपाध्याय की भूमिका, कार्यवाहक अध्यक्ष का त्याग पत्र, महामंत्री–प्रतिवेदन, हिन्दू महासभा, रामराज्य–परिषद् और भारतीय जनसंघ।

- **भारतीय जनसंध सेवाभावी राजनीति की ओर** :

प्रथम आम चुनाव, कश्मीर आन्दोलन, सदस्य–संख्या में क्रमशः वृद्धि, भारतीय जनसंघ की जीत और पशुवध बंदी, विधान सभा, लोकसभा चुनावों में क्रमशः सफलता की ओर।

• दीनदयाल उपाध्याय : भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष

जौनपुर संसदीय चुनाव, विदेश यात्रा, भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, संविद सरकारें (1967) और दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. राममनोहर लोहिया और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, दीनदयाल उपाध्याय और श्रीगुरूजी, दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. मुखर्जी, महाप्रयाण, पंडित दीनदयाल उपाध्याय की हत्या और अनुत्तरित प्रश्न।

इकाई–4 एकात्म मानवदर्शन की अवधारणा

- एकात्म मानव दर्शन : अर्थ एवं अवधारणाएँ : ऐतिहासिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि,
- एकात्म मानव दर्शन पर दैशिकशास्त्र का प्रभाव,
- प्राचीन भारतीय चिन्तन परंपरा का प्रभाव,
- पाश्चात्य चिन्तनधारा के आलोक में,
- मध्यकालीन भारतीय विचार एवं परंपरा का प्रभाव,
- मुबई में 'एकात्म मानवदर्शन' पर व्याख्यान।
- **विकास–क्रम एवं नामकरण**
- सांस्कृतिक पुनरूत्थान विषयक प्रथम प्रस्ताव,
- मानवदर्शन शब्द का प्रयोग,
- समाजवाद, लोकतंत्र और मानववाद (हिन्दुत्ववाद),
- नामकरण,
- एकात्म मानव दर्शन और दत्तोपंत ठेंगड़ी।

• रचना की आकृति

व्यष्टि तथा समष्टि : सकेंद्री रचना तथा मंडलाकार रचना चार स्तंभ :
(क) शिक्षा (ख) कर्म (ग) योगक्षेम व (घ) यज्ञ।

एकात्म मानव दर्शन की समाजशास्त्रीय प्रकृति

(क) एकात्मता (ख) समग्रता (ग) पूरकता (घ) आत्मीयता (च) वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के '**एकात्म मानव दर्शन'** की प्रासंगिकता (छ) 'एकात्म मानवदर्शन**'** की समीक्षा।

इकाई–5 दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन

- दार्शनिक पृष्टभूमि, भारत में दर्शन का क्रमिक विकास, पाश्चात्य दर्शन का विकास–क्रम, भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ, भारतीय संस्कृति और दर्शन, पूर्व और पश्चिम।

दर्शन का संबंध : दर्शन और धर्म, दर्शन और राजनीति, दर्शन और समाजशास्त्र, दर्शन और इतिहास, दर्शन और संस्कृति, संस्कृति और धर्म, संस्कृति और राष्ट्र।

दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन

- कर्म : अवधारणा, प्रकार, कर्मयोग व निष्काम कर्मयोग, पुरूषार्थ : अर्थ, अवधारणा, प्रकार, साध्य एवं साधन, वर्णाश्रम व्यवस्था, धर्म–धर्म निरपेक्षता तथा छद्म धर्म निरपेक्षता।

दीनदयाल उपाध्याय–ज्ञान मीमांसा और तत्व मीमांसा

- आत्मा, परमात्मा, ईश्वर, जीव, जगत और विराट, माया, चिति, जाति व अधिलवण, चित्त एवं चित्त वृत्तियाँ, सुख, सम्प्रदाय, राष्ट्र, जयिष्णु राष्ट्रवाद व जीवन का लक्ष्य, भक्ति एवं साधना, व्यष्टि, समष्टि, संस्कृति, संप्रदाय, भारतमाता, गुरू और भगवाध्वज।

• **वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और दीनदयाल उपाध्याय का दर्शन**

अनुमोदित पुस्तकें/Recommended Books

- संपादक डॉ. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय, खंड 1–15, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
- दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, खंड 1–7, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 1991
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, आधुनिक भारत के निर्माता : पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
- दीनदयाल उपाध्याय, अखंड भारत और मुस्लिम समस्या, जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, जगद्गुरू शंकराचार्य, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2004
- दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2005
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और संवाद कला, शिवगंगा प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : 2021
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कुशल संगठक, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद (उ.प्र.), 2018
- डॉ. कमल किशोर गोयनका, दीनदयाल उपाध्याय,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली, 2018
- दीनदयाल उपाध्याय, सम्राट चंद्रगुप्त, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2004
- डॉ. सुनीता, डॉ. संजय कुमार, दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और राजनीतिक विचार, श्री कला प्रकाशन, दिल्ली–110007, 2021
- डॉ. सुनीता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पुरोधा, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली, 2021
- प्रो. अरूण कुमार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, मूनआर्क क्रिएशंस, अंबाला, 2020

Prof. Arun Kumar, Prof. Pramod Kumar, Deendayal Upadhyay World of Literature Annotated Bibliography, Moon Arc Creations, Ambala, 2021

Shiv Shakti Nath Bakshi, Deendayal Upadhyay life of an Ideologue Politician, Rupa Publication P. Ltd; New Delhi, 2018

द्वितीय प्रश्न पत्र

पाठ्यक्रम : PGDDUS - 102

दीनदयाल उपाध्याय : सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन

क्रेडिट : 6 **पूर्णांक : 100**

समय : 3 घंटें

उद्देश्य–पाठ्यक्रम पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन के अध्ययन तथा समझ को विकसित करने के लिए बनाया गया है।

परिणाम–विद्यार्थी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों के प्रति स्वतंत्र सोच एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण का निर्माण होगा ।

इकाई–1 सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन की पृष्ठभूमि :

- भारत में सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन का विकास एवं प्रभाव,
- पश्चिम में सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन का विकास एवं प्रभाव
- दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक–राजनीतिक चिन्तन की विशेषताएँ,
- व्यक्ति एवं समाज का संबंध,
- दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार समाज में व्यक्ति का स्थान,
- व्यक्ति, समाज और राज्य में संबंध,
- सामाजिक पुर्नसंरचना में स्थान–धर्म और नीति, आत्मसंयम, आत्मनिर्भरता एवं पारस्परिक सहयोग।
- सामाजिक परिवर्तन और विचारधारा :
- पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, गांधीवाद।

इकाई–2 सामाजिक संस्थाएँ और सामाजिक सक्रियता

- विवाह, परिवार, नातेदारी, संस्कृति और धर्म, संस्कृति और संस्कार, संस्कृति और राष्ट्र,संपत्ति, कानून और रीति–रिवाज, शिक्षा, धर्म और पथ निरपेक्षता, ईसाई मिशनरी और शैक्षणिक संस्थाएँ, उपनिवेशवाद और भारतीय दृष्टि, धर्म व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, राज्य व्यवस्था।
- वर्ण–व्यवस्था और जाति व्यवस्था, परिवर्तनाकांक्षा, सनातन धर्म, धर्मांतरण की समस्या, हिन्दू–मुस्लिम एकता, साम्प्रदायिकता बनाम राष्ट्रवाद, हिन्दू जागरण, राष्ट्रध्वज, स्वयंसेवक, कार्यकर्ता और प्रचारक।
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, विश्व हिन्दू परिषद्, भारतीय मजदूर संघ, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, पत्रकारिता, सामाजिक सुधार, लोकमत–परिष्कार।

इकाई–3 सामाजिक संरचना, सामाजिक सुधार और पंडित दीनदयाल उपाध्याय

- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और मातृशक्ति को सम्मान,
- सभ्यता और संस्कृति की अवधारणा,
- **सामाजिक बुराईयाँ** : परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण, कानून का पालन, रिश्वत का विरोध, संस्कार एवं शिक्षा, लोकमत–परिष्कार हेतु कार्यकर्ता प्रशिक्षण,

- वैयक्तिक स्वंतत्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व–परम वैभव का संघ मार्ग मूलक समाज में समन्वय,
- सामाजिक न्याय एवं सामाजिक समरसता,
- सामाजिक परिवर्तन–सत्याग्रह और आन्दोलन,

इकाई–4 राजनीतिक अवधारणाएँ भाषा नीतियाँ एवं परंपराएँ

- लोकतंत्र, कर्तव्य, अधिकार, सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता, राजनीतिक संस्कृति, जनतंत्र और राजनीतिक दल।
- कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दल (क) अर्थवादी (ख) राजनीतिकवादी (ग) मतवादी और (घ) संस्कृतिवादी।

• भारत के राजनीतिक दल और पंडित दीनदयाल उपाध्याय :

(क) कांग्रेस और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, (ख) अखिल भारतीय रामराज्य परिषद् और दीनदयाल उपाध्याय (ग) हिन्दू महासभा और पं. दीनदयाल उपाध्याय, (घ) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और दीनदयाल उपाध्याय, (ङ) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी और दीनदयाल उपाध्याय, (च) मुस्लिम लीग और पं. दीनदयाल उपाध्याय।

• राजनीतिक परंपराएँ : पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद और गांधीवाद के प्रति दीनदयाल उपाध्याय की राजनीतिक दृष्टि।

• भारतीय–भाषा नीतियाँ : (क) संस्कृत, (ख) हिन्दी, (ग) अंग्रेजी, (घ) उर्दू, (ङ) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा (च) प्रादेशिक भाषाएँ बनाम हिन्दी/अंग्रेजी

इकाई–5 राजनीतिक सक्रियता और राजनीतिक चिन्तन

- कश्मीर आन्दोलन, गोवा–मुक्ति आन्दोलन, बेरूबाड़ी हस्तांतरण के खिलाफ जनअभियान, कच्छ–करार विरोधी विराट प्रदर्शन।

• विदेश नीति

- राष्ट्रवादी विदेश नीति, भारत–पाक युद्ध, 1965 और ताशकंद समझौता,
  (क) नए शक्ति गुट की आवश्यकता, (ख) साम्यवाद और साम्राज्यवाद, (ग) अंतर्राष्ट्रीयतावाद, (घ) पाकिस्तान और चीन के प्रति दृष्टिकोण।
- आधारभूत सुरक्षा नीति, सैनिकीकरण तथा अणुबम, स्वराष्ट्र नीति व अर्थनीति, तटस्थ नीतियाँ।
- राज्य : उत्पति, धर्मराज्य, राज्यवाद।
- प्रजातंत्र की अवधारणा
  (क) लोकतंत्र का भारतीयकरण–देश का सैनिकीकरण, जनता का राष्ट्रीयकरण, अर्थव्यवस्था का स्वदेशीकरण।
  (ख) लोकमत–परिष्कार एवं सामान्य इच्छा, सहिष्णुता एवं संयम, अनासक्त भाव, कानून के प्रति आदर, अच्छा उम्मीदवार, अच्छा दल, राजा–महाराजा, जातिवाद, उद्योगपति एवं अच्छा मतदाता।
  (ग) राष्ट्रीय एकता के लिए प्रजातंत्र आवश्यक (घ) साझे मोर्चों की अवसरवादी राजनीति।
- समाजवाद, लोक कल्याणकारी राज्य, संधात्मक बनाम एकात्मक संविधान :

(क) संघात्मक शासन (ख) एकात्मक राज्य।

- राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयता।
- प्रशासन का विकेन्द्रीकरण, विधान मंडल, राज्यपाल, नयी परंपराओं का विकास, दल–बदल, एकात्मक शासन, ध्यान भ्रमित करने वाले प्रश्न।
- बदलते सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में दीनदयाल उपाध्याय के चिन्तन की प्रासंगिकता।

अनुमोदित पुस्तकें/Recommended Books

- संपादक डॉ. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय, खंड 1–15 प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
- दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, खंड 1–7, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 1991
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय : कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन 4/19, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, आधुनिक भारत के निर्माता : पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
- दीनदयाल उपाध्याय, अखंड भारत और मुस्लिम समस्या, जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, लोकहित प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय, जगद्गुरू शंकराचार्य, लोकहित प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ (उ. प्र.), 2004
- दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, राजेन्द्रनगर, लखनऊ (उ.प्र.), 2005
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और संवाद कला, शिवगंगा प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.), प्रथम संस्करण : 2021
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कुशल संगठक, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद (उ.प्र.), 2018
- डॉ. कमल किशोर गोयनका, दीनदयाल उपाध्याय,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली, 2018
- दीनदयाल उपाध्याय, सम्राट चंद्रगुप्त, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2004
- डॉ. सुनीता, डॉ. संजय कुमार, दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और राजनीतिक विचार, श्री कला प्रकाशन, दिल्ली–110007, 2021
- डॉ. सुनीता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पुरोधा, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली, 2021
- प्रो. अरूण कुमार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, मूनआर्क क्रिएशंस, अंबाला, 2020

Prof. Arun Kumar, Prof. Pramod Kumar, Deendayal Upadhyay World of Literature Annotated Bibliography, Moon Arc Creations, Ambala, 2021

Shiv Shakti Nath Bakshi, Deendayal Upadhyay life of an Ideologue Politician, Rupa Publication P. Ltd; New Delhi,

तृतीय प्रश्न पत्र
पाठ्यक्रम कोड : PGDDUS 103
दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित समाज नीति एवं अन्य नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन

क्रेडिट : 6 **पूर्णांक : 100**

समय : 3 घंटें

उद्देश्य–इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रतिपादित सामाजिक मापन विधि का सम्यक ज्ञान देना तथा समझ विकसित करना है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक राजनेता के साथ ही अवलोकन के भी विशेषज्ञ थे। इसकी जानकारी देना भी समीचीन होगा।

परिणाम–इससे विद्यार्थी के अंदर स्वतंत्र सोच तथा चुनौतियों के समाधान में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।

इकाई–1 भारत में सामाजिक अनुसंधान की पृष्ठभूमि

- दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक चिन्तन पर भारतीय सामाजिक चिन्तनधारा का प्रभाव
- प्राचीन, मध्यकालीन एवं समकालीन प्रभाव,
- पाश्चात्य सामाजिक चिन्तन का प्रभाव, समतावादी सामाजिक दृष्टि,
- समाजनीति का भारतीयकरण : (क) धर्म और समाज (ख) संयमित उपभोग (ग) 'मै' और 'हम' (घ) भारत एवं पश्चिम में अंतर, सामाजिक लोकतंत्र, (ङ) अंत्योदय की अवधारणा।

इकाई–2 भारतीय समाजनीति–विकास और पंडित दीनदयाल उपाध्याय

- **समाज चिन्तन** : साध्य–साधन विवेक, पश्चिम के अर्थशास्त्र की अनुकूलता, नई परिभाषाएँ, निहित स्वार्थ, शासन की सीमाएँ, मौलिक विचार की आवश्यकता।
- **भारतीय संस्कृति में अर्थ** : धर्मस्य मूलमर्थः, अर्थ का प्रभाव, जीवन के मानदंड, पश्चात्य अर्थशास्त्र की मान्यताओं की सीमाएँ, सर्वांगीण दृष्टिकोण की आवश्यकता, चार पुरूषार्थ, चार विधाएँ।
- **आधारभूत लक्ष्य** : सैनिक सामर्थ्य की अभिवृद्धि, आत्मनिर्भरता, प्रजातंत्र का पोषण, व्यक्ति के अधिकार, प्रत्येक को काम, मर्यादाएँ, अर्ध–बेकारी, विकेन्द्रीकरण।
- **प्राथमिकताएँ :** उत्पादन में वृद्धि, जनसंख्या में वृद्धि, उपभोग्य वस्तुओं का आधिक्य, उत्पादन की सीमा, उपभोग की मर्यादा, खाद्य, कृषि पर भार, प्रौद्योगिकी और कृषि, कृषि में आयवृद्धि की आवश्यकता, कृषि उत्पादन की वृद्धि, खाद्यान में आत्मनिर्भरता।
- **कृषि :** खेती पर भार, विविध कार्यक्रम, खेती की पद्धति में सुधार, छोटी योजनाएँ, हल या ट्रैक्टर, अदेवमात्रिका कृषि, खाद एवं उर्वरक, भारतीय पृष्ठभूमि का विचार, भूधृति, अधिकतम, जोतने वाले की भूमि : व्याख्या अधिकतम जोत, भू–वितरण, जोत की मर्यादाएँ, अपवाद, सहकारी खेती, भूक्षरण, विपणन व मूल्य निर्धारण।

इकाई–3 उद्योग, पूंजी और मशीन

- उद्योग : औद्योगिकीकरण की आवश्यकता, विचारणीय उपादान, सामाजिक उद्देश्य, विद्यमान उद्योग, नयी प्रौद्योगिकी की आवश्यकता इत्यादि।

• **मनुष्य एवं मशीन** : बेकारी, पूर्ण रोजगार, ग्रामीण बेकारी की विशेषता, संक्रमणशीलता, कारीगरी, मशीन, पश्चिमी यंत्रों की अनुकूलता, उपयुक्त मशीन, मशीन से उत्पादन में वृद्धि, मशीन और बेकारी, मशीन की मर्यादाएँ, शक्ति।

• **पूंजी और प्रबंधन** : पूंजी का मार्ग, विदेशी पूंजी, औद्योगिकीकरण पर प्रभाव, पूंजी के प्रकारः प्रत्यक्ष पूंजी, भारत में विदेशी पूंजी, विदेशी पूंजी और भारतीयकरण, विदेशी पूंजी उपयोग की क्षमता, उद्यमी, प्रबंधन या संगठन, व्यक्ति की सीमाएँ, मानव संबंध।

मांग :–विदेशों में नए बाजारों की खोज, देश में व्यापक बाजार, मांग और उत्पादन का मेल, उद्योगों का प्रसार, उपभोग वस्तुओं की प्राथमिकता, उत्पादक एवं मूल उद्योग, सुरक्षा और भारी उद्योग, भारी उद्योगों के लिए बलिदान।

• **छोटे और बड़े उद्योग :** बड़े उद्योगों की अनुपयुक्तता, विषमता, विकेन्द्रीकरण, कराधान और विषमता, निजी संपति का प्रश्न, विकेन्द्रीकरण के विभिन्न स्वरूप, साम्यवाद एवं पूंजीवाद में समानता, छोटे कारखाने, छोटे और बड़े उद्योगों में गठबंधन, लघु उद्योगों में किफायत, उद्योगों का स्वामित्व, बड़े उद्योगों के क्षेत्र, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र, सार्वजनिक उद्योगों का प्रबंधन, निजी उद्योगों का स्वामित्व, कर्मचारियों का स्वर।

इकाई–4 यातायात, व्यापार और समाज सेवाएँ

यातायात : सड़क–बैलगाड़ी, मोटर यातायात, राष्ट्रीयकरण की अनुपयुक्तता, नौकायन, जहाजरानी।

व्यापार : सरकारी व्यापार, गल्ले के व्यापार का राष्ट्रीयकरण।

• **समाज सेवाएं :** आर्थिक दृष्टि से, सार्वजनिक निर्माण, मकान, शासन का दायित्व, नियोजन का स्वरूप, नियोजन एवं प्रजातंत्र, नीति एवं नियोजन।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना : योजना की मौलिक गलती, तीसरी योजना आदि।

इकाई–5 पंचवर्षीय योजनाएँ, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था और दीनदयाल उपाध्याय

भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाएँ :

• प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना, तृतीय पंचवर्षीय योजना, चतुर्थ पंचवर्षीय योजना, योजनाओं की उपलब्धियाँ एवं दोष, योजनाओं की जिम्मेदारी, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, रचनात्मक कार्यक्रम और संधारणीय विकास। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय, वैश्वीकरण और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, स्वदेशी जागरण की सार्थकता और वर्तमान आर्थिक नीतियाँ, एफडीआई का मायाजाल, गरीबी, असमानता और बेरोजगारी।

• **आर्थिक विकास के सूचक** : पीक्यूएलआई (PQLI), एचडीआई (HDI), एसडीजी (SDG) इत्यादि।

• भ्रष्टाचार का वैश्वीकरण, जीवन सारिणी, प्रवास व प्रवजन, दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिन्तन की प्रासंगिकता।

अनुमोदित पुस्तकें/Recommended Books

- संपादक डॉ. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय, खंड 1–15 प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016

- दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, खंड 1–7, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 1991
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, आधुनिक भारत के निर्माता : दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
- दीनदयाल उपाध्याय, अखंड भारत और मुस्लिम समस्या, जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, जगद्गुरू शंकराचार्य, लोकहित प्रकाशन, लखनउ (उ.प्र.), 2004
- दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2005
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, दीनदयाल उपाध्याय और संवाद कला, शिवगंगा प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : 2021
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, दीनदयाल उपाध्यायः कुशल संगठक, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद (उ.प्र), 2018
- डॉ. कमलकिशोर गोयनका, दीनदयाल उपाध्याय,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली, 2018
- दीनदयाल उपाध्याय, सम्राट चंद्रगुप्त, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2004
- डॉ. सुनीता, डॉ. संजय कुमार, दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और राजनीतिक विचार, श्री कला प्रकाशन, दिल्ली–110007, 2021
- डॉ. सुनीता, दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पुरोधा, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली, 2021
- प्रो. अरूण कुमार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, मूनआर्क क्रिएशंस, अंबाला, 2020

Prof. Arun Kumar, Prof. Pramod Kumar, Deendayal Upadhyay World of Literature Annotated Bibliography, Moon Arc Creations, Ambala, 2021

Shiv Shakti Nath Bakshi, Deendayal Upadhyay life of an Ideologue Politician, Rupa Publication P. Ltd; New Delhi, 2018

चतुर्थ प्रश्नपत्र

पाठ्यक्रम कोड : PGDDUS 104

दीनदयाल उपाध्याय और अन्य समकालीन भारतीय विचारक

क्रेडिट : 6 **पूर्णांक : 100**

समय : 3 घंटें

उद्देश्य–यह पाठ्यक्रम प्रमुख समकालीन भारतीय विचारकों के प्रमुख विषयों का परिचय देता है। इस विषय के अंतर्गत महात्मा गांधी, डॉ. राम मनोहर लोहिया, जवाहर लाल नेहरू, डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरूजी, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी, स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर, महामना मदनमोहन मालवीय, धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी, नानाजी देशमुख, दत्तोपंत ठेंगड़ी, धर्मपाल, हो.वे. शेषाद्रि, डॉ. आंबेडकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, जैसे भारतीय

विचारकों द्वारा व्यक्त विचारों की विभिन्न धाराओं के बारे में छात्र गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे। पाठ्यक्रम का उद्देश्य समय के साथ सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चुनौतियों का समाधान प्रदान करना तथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों को बदलना भी है। इसका उद्देश्य छात्रों को विचारकों से संबंधित ग्रंथों को पढ़ने हेतु रुचि जागृत करना तथा दर्शन को समझने के लिए प्रेरित करना है।

परिणाम–यह पाठ्यक्रम स्वतंत्र रूप से अध्येता को सोचने, भारतीय चिन्तन परम्परा के प्रति राष्ट्रीय स्वाभिमान व समय की चुनौतियों का विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करने की अपेक्षा करता है ।

इकाई–1

महामना मदनमोहन मालवीय (1861–1946

• जीवन चरित, हिंदू संगठन–अखिल भारतीय सनातन धर्म महासभा, सेवा समिति, हिंदू महासभा, अस्पृश्यता का विरोध, मातृ शक्ति सेवा कार्य, गोरक्षा एवं गंगा सत्याग्रह, हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं पत्रकारिता, धर्म, शिक्षा एवं काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना, संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति से प्रेम, महामना मदनमोहन मालवीय के विचारों की प्रासंगिकता।

महात्मा गांधी (1868–1948)

• जीवन परिचय, एकादश व्रत, रामराज्य, संसदीय प्रजातंत्र, अधिकार और कर्तव्य, प्रजातांत्रिक विकेंद्रीकरण, हिंद स्वराज्य– एक अध्ययन, शिक्षा और धर्म, उच्च शिक्षा, ट्रस्टीशिप, स्वदेशी, रचनात्मक कार्यक्रम, वर्तमान समय में गांधी चिंतन की प्रासंगिकता।

स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर (1883–1966)

• जीवन परिचय, भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, मोपला विद्रोह एवं हिंदू समाज, सावरकर का हिंदुत्व, अहिंसा, अखंड भारत, हिंदू–राष्ट्र की अवधारणा, राजनीति का हिंदूकरण, हिंदुओं का सैनिकीकरण, स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर के विचारों की प्रासंगिकता।

इकाई–2 डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (1889–1940)

• जीवन परिचय, भारतीय संस्कृति, सामाजिक एकता और संगठन, अस्पृश्यता, राष्ट्र सर्वोपरि भावना, महिला अधिकार, अंत्योदय, स्वदेशी चिंतन, राष्ट्रीय अस्मिता, भारतीय भाषा एवं राष्ट्रभाषा, डॉ केशव बलिराम हेडगेवार के चिंतन की प्रासंगिकता।

पंडित जवाहरलाल नेहरू (1889–1964)

• जीवन चरित, राजनीति में नैतिक मूल्य : व्यक्ति तथा राज्य, मानवतावाद, लोकतांत्रिक समाजवाद और लोकतंत्र, मार्क्सवाद और साम्यवाद, सांप्रदायिकताः धर्म तथा राजनीति, धर्म–निरपेक्ष राज्य, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद, विश्व एकता–पंचशील और गुटनिरपेक्षतावाद, जवाहरलाल नेहरू के विचारों की प्रासंगिकता।

डॉ. भीमराव आंबेडकर (1891–1956)

• जीवन परिचय, जाति उच्छेदन और अस्पृश्यता का विरोध, हिंदूवाद का दर्शन, नव बौद्धवाद, गांधी और कांग्रेस के प्रति दृष्टिकोण, देशप्रेम और सामाजिक न्याय, कार्ल मार्क्स और डॉ. आंबेडकर, प्रजातंत्र की अवधारणा, महिला जागरण, डॉ आंबेडकर–एक उदारवादी राष्ट्रवादी, वर्तमान भारत में डॉक्टर आंबेडकर के विचारों की प्रासंगिकता।

इकाई– 3 नेताजी सुभाष चंद्र बोस (1897–1945)

• जीवन परिचय, कर्मयोगी, जाति, लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता और अधिकार, साध्य एवं साधन, वामपंथ ,फांसीवाद और नेताजी, राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयता, उच्चतम देशभक्ति, समाजवाद, भारतीय संस्कृति, युवा शक्ति–विद्यार्थी और राजनीति, भाषा, भारतीय नारी, आजाद हिंद फौज की स्थापना, नेताजी के विचारों की प्रासंगिकता।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी (1901–1953)

• जीवन परिचय, अखंड भारत की संकल्पना, सांप्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता, दो विधान–दो प्रधान और दो निशान, शिक्षा एवं शिक्षण पद्धति, अंग्रेजी–राष्ट्रभाषा एवं भारतीय भाषाएं, राष्ट्र सर्वोपरि भावना और भारत का विभाजन, भारतीय संविधान, धर्म एवं धर्मनिरपेक्षता, स्वदेशी चेतना, डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी के विचारों की प्रासंगिकता।

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी (1906–1973)

• जीवन परिचय, भारत माता, युवा शक्ति, भारतीय नारी, भारतीय संस्कृति, अर्थनीति, राजनीति, साध्य–साधन संबंध, अधिकार एवं कर्तव्य, राष्ट्र एवं राज्य, शिक्षा, हिंदू समाज का संगठन, प्रचारक और प्रचारक पद्धति, सामाजिक समरसता, प्रचारक–कार्यकर्ता और मातृशक्ति, भारत विभाजन और श्रीगुरुजी, श्रीगुरुजी के विचारों की प्रासंगिकता।

इकाई–4 धर्मसम्राट स्वामी करपात्री (1907–1982)

• जीवन चरित, धर्मसंघ : स्थापना और उद्देश्य, अखिल भारतीय रामराज्य परिषद–स्थापना, उद्देश्य एवं कार्य, गोरक्षा आंदोलन, सनातन धर्म और भारत, मार्क्सवाद और रामराज्य (रामायण में राजनीति, धर्म, परिवार व्यवस्था और नारी धर्म), वर्णाश्रम व्यवस्था और जाति, काशी की पांडित्य परंपरा, भागवत्पुराण और नवम स्कंध, धर्मसम्राट स्वामी करपात्री जी के विचारों की प्रासंगिकता।

डॉ. राममनोहर लोहिया (1910–1967)

• जीवन परिचय, जाति प्रथा, सप्तक्रांतियां, अहिंसा और विकेंद्रीकरण, भारत विभाजन समाजवादी आंदोलन का इतिहास, राम–कृष्ण और शिव, हिंदी भाषा, मातृशक्ति, सत्याग्रह–असहयोग आंदोलन और घेराव, डॉ. राममनोहर लोहिया के चिंतन की प्रासंगिकता।

नानाजी देशमुख (1916–2010)

• जीवन परिचय, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और नानाजी देशमुख, राजनीति में सेवानिवृत्ति की आयु, युवा शक्ति और युवाओं के नाम पत्र, मातृशक्ति, शिक्षा का प्रयोग–चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, आपातकाल–लोकतंत्र और नानाजी देशमुख, पंचायती व्यवस्था एवं चित्रकूट के गांव, दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत एवं दीनदयाल शोध संस्थान, नानाजी देशमुख के विचारों की प्रासंगिकता।

इकाई–5 दत्तोपंत ठेंगड़ी (1920–2004)

• जीवन परिचय, दत्तोपंत ठेंगड़ी–कुशल संगठक, सनातन हिंदू विचार की स्थापना, कार्यकर्ता–कार्य और कार्यक्रम विवेक, मनुष्य जीवन का उद्देश्य, विनम्र नेतृत्व का आदर्श, अचल ध्येय वृत्ति, संगठन का आधार पारिवारिक भाव, डॉ. आंबेडकर और सामाजिक क्रांति, स्वदेशी जागरण की सार्थकता, भारतीय

कृषि और किसान संगठन, भारतीय संस्कृति में अर्थ, युवाशक्ति और राष्ट्रीय एकता, शिक्षा का भारतीयकरण, श्रमिक शक्ति का राष्ट्रीयकरण, सामाजिक समता व सामाजिक समरसता, दत्तोपंत ठेंगड़ी के विचारों की प्रासंगिकता।

धर्मपाल (1922–2000)

• जीवन चरित, भारतीय शिक्षा, भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भारतीय परंपरा और सविनय अवज्ञा, भारतीय चित–मानस और काल, गोवध एवं ब्रिटिश काल, भारत का स्वधर्म, गांधी को समझना, मैकालेवादी सोच एवं ब्रिटिश भारत, आचार्य धर्मपाल के विचारों की प्रासंगिकता।

हो.वे. शेषाद्री(1926–2005)

• जीवन परिचय, हिंदू साम्राज्य दिनोत्सव और युगावतार छत्रपति शिवाजी, आपातकाल, लोकतंत्र और हो.वे. शेषाद्री, हिन्दू समाज और भारत का विभाजन, अखंड भारत–स्वप्न और यथार्थ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कार्यकर्ता–एक ध्येय पथिक, चिंतन गंगा, कृति रूप संघ दर्शन (वनवासी, विद्यार्थी, मातृशक्ति और राजनीति के क्षेत्र में।), हो.वे. शेषाद्री के विचारों की प्रासंगिकता।

अनुमोदित पुस्तकें/Recommended Books

- डॉ. पुरूषोत्तर नागर, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर(राज.), प्रथम संस्करण : 1980
- डॉ. आर.पी. पाण्डेय और अन्य, आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारक, नवराज प्रकाशन, दिल्ली–110053, प्रथम संस्करण : 2014
- डॉ.बी. सिंह गहलौत, समकालीन राजनीतिक विचारक, अर्जुन प्रकाशन घर, 4831/24 प्रह्मलाद गली, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002, प्रथम संस्करण : 2011
- डॉ. विप्लव, भारतीय राजनीतिक चिन्तन, राहुल प्रकाशन, 348/6, शास्त्री नगर, मेरठ (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : 2013
- डॉ.ए. अवस्थी/डॉ. आर.के. अवस्थी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च प्रकाशन, जयपुर–(राज.) 2002
- प्रो. सोहन लाल तातेड़ व अन्य आधुनिक भारतीय चिन्तक, एम.के. प्रकाशन, जयपुर (राजस्थान) खंड 1–2 प्रथम संस्करण : 2012
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, 'भारतीय चिन्तक', शिवगंगा प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) खंड 1–2, संस्करण : 2021
- डॉ. रामजी मिश्र, प्रमुख ऋषि मुनियों की परंपरा, प्रयागराज, 2000
- भगिनी निवेदिता, 'पथ और पाथेय' लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2003
- चं.प. भिशीकर, श्री बाबा साहब आप्टे : जीवन और कार्य, अर्चना प्रकाशन, भोपाल (म.प्र.), प्रथाम संस्करण : 2003

•

दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि के द्वितीय सेमेस्टर के प्रश्न पत्रों की योजना विधि :

क्र. सं.	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	प्रश्न पत्र का नाम	क्रेडिट	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्ण अंक
1.	प्रथम प्रश्न पत्र	**PGDDUS-105**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYAY : ARTHIK CHINTAN**	06	100	33
2.	द्वितीय प्रश्न पत्र	**PGDDUS-106**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYAY KE JIVAN PAR AADHARIT LAGHU SHODH PRABANDH**	06	100	33
3.	तृतीय प्रश्न पत्र	**PGDDUS-107**	**PT. DEEN DAYAL UPADHAYAY KE VYAKTITWA EVAM: KRITITWA PAR AADHARIT SAIKSHRIK BHRAMAN YATRA KA PRATIVEDAN**	06	100	33
4.	चतुर्थ प्रश्न पत्र	**PGDDUS-108**	**PT. DEENDAYAL UPADHAYAY PAR AADHARIT SAMANYA MAUKHIK PARIKSHA**	06	100	33
कुल योग				24	400	132

प्रथम प्रश्न पत्र
द्वितीय सेमेस्टर
कोर्स कोड : PGDDDUT 105
दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक चिन्तन

क्रेडिट : 6 **पूर्णांक : 100**
समय : 3 घंटें

उद्देश्य–इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अर्थ संबंधी विचारों का सम्यक ज्ञान देना तथा समझ विकसित करना है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक राजनेता के साथ ही अर्थनीति के भी विशेषज्ञ थे। इसकी जानकारी देना भी समीचीन होगा।
परिणाम–इससे विद्यार्थी के अंदर स्वतंत्र सोच तथा आर्थिक चुनौतियों के समाधान में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।

इकाई–1 भारत में अर्थिक चिन्तन की पृष्ठभूमि

- दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिन्तन पर भारतीय आर्थिक चिन्तनधारा का प्रभाव
- प्राचीन, मध्यकालीन एवं समकालीन प्रभाव,
- पाश्चात्य आर्थिक चिन्तन का प्रभाव, समतावादी आर्थिक दृष्टि,

• अर्थनीति का भारतीयकरण : (क) धर्म और श्रम (ख) संयमित उपभोग (ग) 'मै' और 'हम' (घ) भारत एवं पश्चिम में अंतर, आर्थिक लोकतंत्र, (ङ) अंत्योदय की अवधारणा।

इकाई–2 भारतीय अर्थनीति–विकास और पंडित दीनदयाल उपाध्याय

• **अर्थ चिन्तन** : साध्य–साधन विवेक, पश्चिम के अर्थशास्त्र की अनुकूलता, नई परिभाषाएँ, निहित स्वार्थ, शासन की सीमाएँ, मौलिक विचार की आवश्यकता।

• **भारतीय संस्कृति में अर्थ** : धर्मस्य मूलमर्थः, अर्थ का प्रभाव, जीवन के मानदंड, पश्चात्य अर्थशास्त्र की मान्यताओं की सीमाएँ, सर्वांगीण दृष्टिकोण की आवश्यकता, चार पुरूषार्थ, चार विधाएँ।

• **आधारभूत लक्ष्य** : सैनिक सामर्थ्य की अभिवृद्धि, आत्मनिर्भरता, प्रजातंत्र का पोषण, व्यक्ति के अधिकार, प्रत्येक को काम, मर्यादाएँ, अर्ध–बेकारी, विकेन्द्रीकरण।

• **प्राथमिकताएँ :** उत्पादन में वृद्धि, जनसंख्या में वृद्धि, उपभोग्य वस्तुओं का आधिक्य, उत्पादन की सीमा, उपभोग की मर्यादा, खाद्य, कृषि पर भार, प्रौद्योगिकी और कृषि, कृषि में आयवृद्धि की आवश्यकता, कृषि उत्पादन की वृद्धि, खाद्यान में आत्मनिर्भरता।

• **कृषि :** खेती पर भार, विविध कार्यक्रम, खेती की पद्धति में सुधार, छोटी योजनाएँ, हल या ट्रैक्टर, अदेवमात्रिका कृषि, खाद एवं उर्वरक, भारतीय पृष्ठभूमि का विचार, भूधृति, अधिकतम, जोतने वाले की भूमि : व्याख्या अधिकतम जोत, भू–वितरण, जोत की मर्यादाएँ, अपवाद, सहकारी खेती, भूक्षरण, विपणन व मूल्य निर्धारण।

इकाई–3 उद्योग, पूंजी और मशीन

• उद्योग : औद्योगिकीकरण की आावश्यकता, विचारणीय उपादान, सामाजिक उद्देश्य, विद्यमान उद्योग, नयी प्रौद्योगिकी की आवश्यकता इत्यादि।

• **मनुष्य एवं मशीन** : बेकारी, पूर्ण रोजगार, ग्रामीण बेकारी की विशेषता, संक्रमणशीलता, कारीगरी, मशीन, पश्चिमी यंत्रों की अनुकूलता, उपयुक्त मशीन, मशीन से उत्पादन में वृद्धि, मशीन और बेकारी, मशीन की मर्यादाएँ, शक्ति।

• **पूंजी और प्रबंधन** : पूंजी का मार्ग, विदेशी पूंजी, औद्योगिकीकरण पर प्रभाव, पूंजी के प्रकारः प्रत्यक्ष पूंजी, भारत में विदेशी पूंजी, विदेशी पूंजी और भारतीयकरण, विदेशी पूंजी उपयोग की क्षमता, उद्यमी, प्रबंधन या संगठन, व्यक्ति की सीमाएँ, मानव संबंध।

मांग :–विदेशों में नए बाजारों की खोज, देश में व्यापक बाजार, मांग और उत्पादन का मेल, उद्योगों का प्रसार, उपभोग वस्तुओं की प्राथमिकता, उत्पादक एवं मूल उद्योग, सुरक्षा और भारी उद्योग, भारी उद्योगों के लिए बलिदान।

• **छोटे और बड़े उद्योग :** बड़े उद्योगों की अनुपयुक्तता, विषमता, विकेन्द्रीकरण, कराधान और विषमता, निजी संपति का प्रश्न, विकेन्द्रीकरण के विभिन्न स्वरूप, साम्यवाद एवं पूंजीवाद में समानता, छोटे कारखाने, छोटे और बड़े उद्योगों में गठबंधन, लघु उद्योगों में किफायत, उद्योगों का स्वामित्व, बड़े उद्योगों के क्षेत्र, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र, सार्वजनिक उद्योगों का प्रबंधन, निजी उद्योगों का स्वामित्व, कर्मचारियों का स्वर।

इकाई–4 यातायात, व्यापार और समाज सेवाएँ

यातायात : सड़क–बैलगाड़ी, मोटर यातायात, राष्ट्रीयकरण की अनुपयुक्तता, नौकायन, जहाजरानी।

व्यापार : सरकारी व्यापार, गल्ले के व्यापार का राष्ट्रीयकरण।

• **समाज सेवाएं :** आर्थिक दृष्टि से, सार्वजनिक निर्माण, मकान, शासन का दायित्व, नियोजन का स्वरूप, नियोजन एवं प्रजातंत्र, नीति एवं नियोजन।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना : योजना की मौलिक गलती, तीसरी योजना आदि।

इकाई–5 पंचवर्षीय योजनाएँ, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था और पंडित दीनदयाल उपाध्याय

भारत सरकार की पंचवर्षीय योजनाएँ :

• प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना, तृतीय पंचवर्षीय योजना, चतुर्थ पंचवर्षीय योजना, योजनाओं की उपलब्धियाँ एवं दोष, योजनाओं की जिम्मेदारी, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, रचनात्मक कार्यक्रम और संधारणीय विकास। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय, वैश्वीकरण और पंडित दीनदयाल उपाध्याय, स्वदेशी जागरण की सार्थकता और वर्तमान आर्थिक नीतियाँ, एफडीआई का मायाजाल, गरीबी, असमानता और बेरोजगारी।

• **आर्थिक विकास के सूचक** : पीक्यूएलआई (PQLI), एचडीआई (HDI), एसडीजी (SDG) इत्यादि।

• भ्रष्टाचार का वैश्वीकरण, जीवन सारिणी, प्रवास व प्रवजन, दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक चिन्तन की प्रासंगिकता।

अनुमोदित पुस्तकें / Recommended Books

- संपादक डॉ. महेश चंद्र शर्मा, दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय, खंड 1–15 प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2016
- दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, खंड 1–7, सुरूचि प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण : 1991
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, पंडित दीनदयाल उपाध्याय : कर्तृत्व एवं विचार, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2015
- डॉ. महेश चंद्र शर्मा, आधुनिक भारत के निर्माता : पंडित दीनदयाल उपाध्याय, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002
- दीनदयाल उपाध्याय, अखंड भारत और मुस्लिम समस्या, जागृति प्रकाशन, नोएडा, 2003
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र जीवन की समस्याएँ, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, जगद्गुरू शंकराचार्य, लोकहित प्रकाशन, लखनउ (उ.प्र.), 2004
- दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय अर्थनीति–विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2009
- दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्र चिन्तन, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2005
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और संवाद कला, शिवगंगा प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) प्रथम संस्करण : 2021
- प्रो. मनोज चतुर्वेदी, डॉ. प्रेरणा चतुर्वेदी, पंडित दीनदयाल उपाध्यायः कुशल संगठक, श्रुति बुक्स, गाजियाबाद (उ.प्र), 2018
- डॉ. कमलकिशोर गोयनका, दीनदयाल उपाध्याय,राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली, 2018
- दीनदयाल उपाध्याय, सम्राट चंद्रगुप्त, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ (उ.प्र.), 2004

- डॉ. सुनीता, डॉ. संजय कुमार, दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक और राजनीतिक विचार, श्री कला प्रकाशन, दिल्ली–110007, 2021
- डॉ. सुनीता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी पत्रकारिता के पुरोधा, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली, 2021
- प्रो. अरूण कुमार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार–दर्शन, मूनआर्क क्रिएशंस, अंबाला, 2020
  Prof. Arun Kumar, Prof. Pramod Kumar, Deendayal Upadhyay World of Literature Annotated Bibliography, Moon Arc Creations, Ambala, 2021
  Shiv Shakti Nath Bakshi, Deendayal Upadhyay life of an Ideologue Politician, Rupa Publication P. Ltd; New Delhi, 2018

दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि प्रश्न पत्र के लिए कुल अंक 800 निर्धारित हैं तथा उत्तीर्ण होने के लिए 264 (Two Hundred Sixty Four) जो कि कुल अंकों का 33 प्रतिशत होगा।